''कविता के विविध रंग'' त्रिलोचन शास्त्री

डॉ0 मंजूकुमारी*

हिन्दी की प्रगतिवादी कविताधारा के कवियों में त्रिलोचन का नाम विशेष समादृत है। आपकी कवितायें विविध रंगों की रचनाएं है। इन कविताओं में एक ओर अनुराग है तो दूसरी ओर चेतना वैश्विक, कहीं तुलसी के दर्शन, तो कहीं निराला के राग, कहीं आधुनिकता की हताशा अभिव्यंजना तो कहीं सत्य की आत्मसत्ता। आपने अपनी कविताओं में सहजता और सरलता की झाँकी प्रस्तुत की है–

''मुझमें जीवन की लय जागी
मैं धरती का हूँ अनुरागी
जड़ी भूत करती थी मुझको
वह सम्पूर्ण निराशा त्यागी''1 (ताप के ताए हुए दिन)

आपकी कविताओं की यह विशेषता रही है कि काव्यरूप की स्थिरता और सारतत्व की गतिशीलता के द्वन्द से कविता में एक वेग और शक्ति की सृष्टि निर्मित होती है।

''क्या करोगे
शून्य प्राणों
को भरोगे
पथ कहाँ, बन
जटिल तरू–धन
हरा कंटक
भरा निर्जन
खेदमन का
क्या हरोगे।''2 (ताप के ताए हुए दिन)

आपकी कविता का जैसे–जैसे हम अवलोकन करते हैं वैसे– वैसे उसका स्वरूप सामने आता जाता है। यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि कविता में जीवन का रंग बहुत गहरा है, जिसमें अनेक प्रकार की विविधता, सरलता, कटुता भरी हुई

पी.डी.एफ. हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

है। आपने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने युग की ताजा सुगन्ध को प्रस्तुत किया है।

''मत जाना चले कही भूल के
दिन ये फूल के हैं
किए मन के सिंगार
सामने कचनार
आम के बौर कहते हैं
देखा बहार
हाल ऐसे ही कुछ
अबबबुल के है।''3 (ताप के ताए हुए दिन)

शास्त्रीय अनुशासन और आधुनिक स्वछन्दता आपकी की अपनी पहचान है। ये कविताएं इस बात को प्रमाणित करती हैं कि प्रगतिशील कविता कोई संकीर्ण और एक पक्षीय कविता नही बल्कि ऐसी कविता है जिसमें जीवन की तरह व्यापकता ओर विविधता है। कविता में शक्ति की सृष्टि की जो मिसाल आपने प्रस्तुत की है वह केवल हिन्दी कविता में निराला में ही सुलभ है।

चोंच में दबाए एक तिनका
गौरय्या
मेरी खिड़की के खुले हुए
पल्ले पर
बैठ गई
और देखने लगी
मुझे और कमरे को
मैने उल्लास से कहा
तूआ
घोंसला बना
जहाँ पसन्द हो
शरद के सुहावने दिनों, से हम साथी हों।4
(ताप के ताए हुए दिन)

आपकी मूल्य परक गहरी चेतना निःसंदेह–कविता को सदा अनुप्राणित करती रही है। एक स्वतंत्र पहचान के साथ–साथ तुकान्त, अतुकांत, मुक्त छन्दों के साथ चौपदे, गजल, सॉनेट जैसे हिन्दी के लिए विजातीय छन्दों का प्रयोग किया। नवीन छन्द, ध्वन्यात्मक तानयी उपमाएं, नई अर्थ शक्ति आदि का समावेश आपकी कविताओं को और समृद्ध बनता है। कविता में नाद सौन्दर्य और

संगीत और भी मुखर हो जाता है जब शब्द जगत से राग भाव जगत में प्रवेश करता है। यह सत्य है कि संगीत के बिना भाषा में शक्ति, स्फुर्ति और आकर्षक गतियाँ उत्पन्न नहीं होती।

आपके गीत संगीत की देशी प्रणाली पर अवस्थित है। गीतिकाव्य में संगीत के नए–नए प्रयोग किये, साथ ही भाषा की सुकोमलता और छन्दों की सरसता का भी ध्यान रखा।

''ये दिन न भुला ऽ ऽ ऽ ऽ ना
ओस ने ही
अनेको आए
सनेहल गाया
बाती मिलाई
दीया जगाया
बिसरमतजा ऽ ऽ ऽ ऽ ना
ओस ने ही।''5 (ताप के ताए हुए दिन)

'धरती' का निम्नलिखित गीत अत्यधिक प्रसिद्ध है। सांगीतिक दृष्टि से इसकी शब्दावली इतनी मधुर है मानो रस छलकता हो। इस रचना संग्रह में गीतों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। जिसमें सिर्फ काव्य सामर्थ्य ही नहीं बल्कि जीवन के विभिन्न भागों का विस्तृत वर्णन है। इसमें एक प्रकार का लय–संयम है न कि आवेग का आक्रोश। सानेट में जो सफलता आपको मिली, हिन्दी के अन्य किसी कवि को वो सफलता प्राप्त नहीं हुई। जीवन की गहन से गहन वास्तविकताओं तथा अपने व्यक्तिगत अनुभवों को जिस सरलता और सहजता के साथ बोल–चाल के लहजे में रखा है वह अन्य कहीं नही।

''औरों का दुख दर्द वहन हीं सहपाता है
यथा शक्ति जितना बनता है कर जाता है।''6 (ताप के ताए हुए दिन)

अपने श्रद्धेय तुलसी बाबा से आपने भाषा सीखी है। तुलसी ने अवधी भाषा का प्रयोग कर अपने महाकाव्य को संगीतमय उन्नति प्रदान की। आपने अवधी भाषा के योग से खड़ी बोली को संगीतमय रस प्रदान किया। ऐसा कहा जाता है कि आपकी कविताओं की पक्तियों में अवधी की देशी खांड जैसी मिठास है।

''केवल रिमझिम का संगीत सुन पड़ता था।
बूंदों की छनकार
ओलतियों की टप–टप टप कारें
पानी का कल कल करते
बहते ही जाना

ऐसे में कानों से सुन ताथा
मंद स्वर।''7 (ताप के ताए हुए दिन)

अन्तोत गत्वा प्रगतिशील हिन्दी कवियों की नवीनतम पीढ़ी में त्रिलोचन शास्त्री जैसे कवियों को समझने और आत्मसात करने के लगन बढ़ रही है।

*****